पं. विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों में संस्कृति का चित्रण

कान्ता देवी
(एम.ए. हिन्दी, नैट)
गांव व डाक. अर्निया वाली, जिला सिरसा

निबन्ध हिन्दी साहित्य की आधुनिक विधाओं में से एक है। उसमें ललित निबंध और भी अधिक आधुनिक है। निबंध एक विचार यात्रा है। ललित निबंध को प्रभाकर माचवे 'आत्मनिबंध' कहते है। जगदिशर्ची माथुर ने 'मन की मौज' कहा है। अनुभूति और विचार दोनों का समन्वय ललित निबंध है। यह रसवादी परंपरा का एक रुप है। यह व्यक्ति प्रधान और विषयप्रधान होता है। इसमें पाठक के साथ लेखक की आत्मियता होती है। बाबु गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय तथा विद्यानिवास मिश्र ललित निबंध परंपरा के प्रमुख यात्री हैं।

विद्यानिवास मिश्र उत्कृष्ट व्यक्तिवादी निबंध लेखकों में से है। आपके 'छितवन की छांह', 'तुम चन्दन हम पानी', 'आंगन का पंछी और बनजारा मन' आदि निबंधों में मनुष्य एवं लोकसंस्कृति का समन्वय दिखा देता है। आपके निबंधों में जीवन की घटनाओं और चिन्तनाओं का अंक न है। भारत और भारतीय तथा उसकी आंतरिक स्थितियों, बाह्य स्वरुपों से वे अपने को अलग नहीं कर पाये। अंतर्मुखता एवं व्यक्ति–केन्द्रीकरण की जगह वे अपने व्यक्ति का विस्तार करते हैं। विद्यानिवास मिश्र भारतीयता को प्रदूषित और विकृत करने वाली विचारधाराओं से टकराते हैं। ''उनका रससिक्त मन ठेठ गांव का है। ठेठपन का यह ठाट उनके निबंधों का प्रतिपाद्य है।''[1] आप आधुनिक युग के एक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। आपकी रुचि लोक–जीवन एवं ग्रामीण समाज की ओर अत्यधिक रही है। साधारण से साधारण

AIRO JOURNALS

विषयों को लेकर उन्हें पौराणिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक संदर्भों से सुसज्जित किया है। पाठक इन ललित निबंधों में अपनी सुधबुध खो बैठता है। यह निबंध पाठकों के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करते हैं। पश्चिम के आधुनिकतावादी समाज की चोट ने भारतीय संस्कृति को बिखेर दिया है। प्रकृति से लगाव के तार, परंपरा, संस्कृति इन स्वरों को पश्चिमवाद तथा बाजारवाद की सस्कृति से तोड़ रहा है। लूट–संस्कृति आज विकसित हो रही है, विद्यानिवास मिश्र उनसे जीवनभर निबंधों के माध्यम से टकराते रहे। वे भारतीय सस्कृति के मर्मग्राही व्याख्याता थे। सस्कृति और परंपरा उनके लिए सिद्ध नहीं बल्कि साध्य है। इस साध्य की साधना ही उनके ललित निबंधों में प्राप्त होती हैं। परंपरा और सस्कृति को बचाने तथा लोक–संस्कृति और लोक–मन की छटपटाहट उनके 'छितवन की छाँह', 'तुम चंदन हम पानी', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', 'अंगद की नियति', 'शेफाली झर रही है' निबंधों में प्राप्त होती हैं।

विद्यानिवास मिश्रजी के निबंधों में लोकजीवन से जुड़े लोकगीतों की, लोकोत्सवों की छटा भी प्रवाहमान है। ललित–निबंध का एक प्रधान लक्षण है व्यग्य विनोद। विद्यानिवासजी के निबधों में हास्य–विनोद का स्पर्श रहता है, उनके 'भ्रमरानंद' नाम से लिखे निबंधों में व्यंग्य–विनोद प्रचुर मात्रा में है। ललित निबंध उद्धरण–बहुलता से बोझिल नहीं हैं, बल्कि उनमें 'बुद्धि' और 'मन' का सहज सामंजस्य है। उनकी सरसता कहीं कमजोर नहीं हूँ और यदि उनमें किसी चीज की प्रधानता है तो आनंद तत्त्व की।

समीक्षक कहते है कि, ''लालित्य को बहुत° ऊँची वस्तु मानते हैं, अत अपने निबंधों को व्यक्तिव्यंजक निबंध कहना ही पसंद करते हैं अपेक्षाकृत ललित निबंध के।''[2] उन्हें स्वयं को ललित निबंधकार कहलाना पसंद नहीं था, बल्कि व्यक्तिव्यंजक निबंधकार कहलाना पसदं करते थे। आपके निबंधों में भारतीय संस्कृति की मूल समस्याओं, लोक–जीवन, राम, कृष्ण जैसे प्रतीक, सूर, तुलसी, जयदेव, विद्यापति, मीरा, रहीम जैसे विशिष्ट रचनाकारों,

AIRO JOURNALS

नदियों, फूलों आदि पर लिखे निबंध संकलित हैं। ''लोक–संस्कृति और लोक–मानस को वे अपनी मिट्टी, संस्कारों की अविभूमि, भीतरी शक्ति से जोड़कर देखते हैं। ''[3] लोकचेतना से रस और शक्ति लेकर विद्यानिवासजी ने भारतीय संस्कृति का वैचारिक मंथन कर हमें अपना अतीत, अपनी स्मृतियों, संस्कारों, मिथकों में समकालीन भाव–मुद्राओं के साथ वर्तमान को प्रत्यक्ष किया है। ''उनका साहित्य एक महानदी की भाँति है, जिसने अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना है।''[4] 'भारतीयता की खोज' शीर्षक निबंध में वे लिखते हैं कि काटना भारतीयता नहीं है, समेटना और समेटकर बड़ा होना भारतीयता है। विद्यानिवासजी ने परपंरा, संस्कृति, मूल्य, आस्था, लोक आदि शब्दों की गभीर व्याख्या की है और उनकी मूल आत्मा को उद्‌घाटित किया है। वे उन अधकचरे, नकलची और हीनताबोध से ग्रस्त भारतीय बुद्धिजीवियों को फटकारते हैं जो पश्चिमी विचारों से आक्रांत हैं। वे संस्कृति के लिए 'कल्चर' राष्ट्र के लिए 'नेशन' धर्म के लिए 'रेलिजन' और 'सेक्युलरिज्म' के लिए 'धर्मनिरपेक्षता' जैसे शब्दों को अपर्याप्त तथा गलत अवधारणा प्रस्तुत करनेवाला मानते हैं। उनका यह कहना सही है कि शब्द जब अनुवाद बनते हैं तो मूल अर्थ का –हास करते हैं।

विद्यानिवासजी के अनुसार, सस्कृति निरंतर चलने वाला व्यापार है। उसमे नया पुराना हो रहा होता है और पुराना नया हो रहा होता है। इसी कारण संस्कृति कभी चुकती नहीं। उनके अनुसार, प्राचीन सस्कृति, नवीन संस्कृति, उच्च वर्गीय संस्कृति, मध्य वर्गीय सस्कृति, निम्न वर्गीय संस्कृति आदि नाम नए गढ़े हुए हैं। वस्तुत संस्कृति एक ही होती है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए कोरे भूगोल–इतिहास की संकीर्णता से पर उठना होगा। विद्यानिवासजी मानते हैं कि भारतीयता अब भी संस्कारी मनों में मौजूद है, भले वे निरक्षर हो। उनकी दृष्टि में अपनी संस्कृति को समझे बिना दूसरी संस्कृति को समझ पाना मुश्किल है। इसीलिए वे सबसे पहले अपनी संस्कृति को समझने पर जोर देते हैं। भारत भूमि की सोंधी माटी की गंध आपके निबंधों की

AIRO JOURNALS

विशेषता है। ललित निबंधों के क्षेत्र में आपका को सानी नहीं। आपके निबंधों में विद्वत्ता, सहृयता और भारतीयता का अपूर्व त्रिवेणी संगम हुआ है। 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबधं संग्रह में वर्तमान भारत में अलगाववाद, क्षेत्रवाद, प्रांतवाद और भाषावाद मिटाने के लिए भावात्मक एकता कैसे जरुरी है; यह वे समझाते है। उनका मानना है कि, अनेक भाषाओं, अनेक धर्मों तथा अनेक रीति–रिवाजों के रहते हुए भी यह देश एक और अभिन्न राष्ट्र है। 'जननी जन्मभूमिश्च' निबंध में मातृभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर माना है। 'मेरा देश वापस लाओ' में लेखक ने भाषा, संस्कृति और शिक्षा के संबंध में अपनी कुछ चिंताएँ व्यक्त की हैं और कुछ ज्वलंत प्रश्न प्रस्तुत किए हैं। 'संस्कृति और समन्वय' निबंध में वे बतलाते हैं कि हमारी निरंतर रुपांतरण की सांस्कृतिक प्रक्रिया एक अविच्छिन्न प्रवाह के रुप में रही है। हमारी संस्कृति अनेक संस्कृतियों के साथ समन्वय करती आ रही है। हम किसी भी धारा का तिरस्कार नहीं करते। विद्यानिवासजी के शुरुआती दौर में लिखे ललित निबंध संग्रह 'तुम चंदन हम पानी' के निबंध भारत की आत्मा के दर्पण है। इनमें हमें अपना घर, अपनी संस्कृति, अपने जातीय संस्कार, अपना जीवन और अपनी सात्विक परपंरा की छवियाँ अनायास दीख पड़ती है। ये निबधं हमारी राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान तो कराते ही हैं, लोक–संस्कृति के प्रति अनुराग भी उत्पन्न करते हैं। लोक–संस्कृति के संदर्भ में ही 'गाँव का मन', 'आँगन का पंछी' निबंध उल्लेखनीय हैं।

आपकी रुचि लोक–जीवन एवं ग्रामीण समाज की ओर अत्यधिक रही। आपके निबंधों में शास्त्रीय वैभव और लोक–संस्कृति का अद्‌भुत संगम मिलता है। पाठक आपके वैयक्तिक निबंधों की ललित कला में ऐसा डूब जाता है कि उसे कुछ क्षणों के लिए अपनी सुधबुध नहीं रहती। इनमें अनुभव की सघ्नता, आनंद का उल्लास, सौन्दर्य की स्नेहिल दृष्टि, गांव का निर्मल व्यवहार आदि बातों को देखा जा सकता है। विद्यानिवास मिश्रजी भारतीयता को प्रदूषित और विकृत करने वाली विचारधाराओं से टकराते हैं। नूतनता, विलक्षणता एवं विदग्धता आपके ललित

AIRO JOURNALS

निबंधों में प्राप्त होती है। आपके व्यक्तिगत निबंध के संदर्भ में डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त कहते हैं कि ''व्यक्तिगत निबंध निबंध इसलिए है कि वे लेखक के समूचे व्यक्तित्व से संबध्द होते हैं। लेखक की सहृदयता और चिन्तनशीलता ही उसके बंधक हैं, विद्यानिवासजी के निबंधों में ये गुण पूर्ण मात्रा में पाये जाते हैं।''[5] वे वर्तमान समस्याओं और साहित्यिक नवीनताओं पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। राजनीतिक, साहित्यिक, सामाजिक समस्याओं पर वे उपालंभ, व्यंग्यात्मक तथा विनोदात्मक पध्दति से विचार करते है। उनके व्यंग्य बड़े तीखे और ठीक स्थान पर बैठने वाले होते हैं। आपके ललित निबंधों में वैयक्तिक उद्याम भावनाओं की उपज होता है। उनके हृदय से निकले ललित निबंध तो वे हैं जिनमें कहीं गाँव के खलिहान में खुशी से झूमते अल्हड़ किसान के मुँह से निकले भोजपुरी लोकगीत का आल्हाद है, कहीं धान कूटती ग्रामीण युवतियों की चूड़ियों की खनक है, कहीं सयुंक्त परिवार की नववधुओं की मंद–मंद हँसी है। लोक सम्वेदना और लोक हृदय की पकड़ बड़ी मर्मस्पर्श बन पड़ी है। उनके ऐसे निबंध जिनके शीर्षक सुनते ही उनकी विषय वस्तु का आभास भी हो सकता है और प्रेरणास्त्रोत का भी। जैसे 'शैफाली झर रही है', 'कंदब की फूली डाल', 'आँगन का पंछी और बनजारा मन', 'बसंत आ गया पर को उत्कंठा नहीं', 'चितवन की छाँह' ये उनके कुछ निबंध संग्रहों के शीर्षक हैं। उनमें सांस्कृतिक सरसता एवं तरलता के हमें दर्शन होते हैं। यह सच है कि शिक्षा, संस्कृति और साहित्य ललित निबंधों के तीन नेत्र हैं। निबंधों की भाषा तत्सम होने पर भी उसकी शक्ति को अक्षुण्ण बनाये रखती है। लोकजीवन के माध्यम से भारतीयता और परंपरा के मूल्यों को पकड़ने का प्रयत्न किया है।

अंत में कहना पड़ेगा की आपने इतने रोचक तथा सरस निबंध लिखे हैं कि वे हिन्दी साहित्य की अपूर्व निधि बन गये हैं। अभिव्यंजना शैली के क्षेत्र में एक विलक्षण परिवर्तन आया है।

संदर्भ :

ARO JOURNALS

पं. विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों में संस्कृति का चित्रण

1. नागरी पत्रिका : सं. डॉ. पघकर पांडे, पृ. 21 अंक 5, 37 जून 2006 ह्नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।
2. साहित्य अमृत पत्रिका (पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति अंक) : सं. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, पृ. 40 अंक मार्च– अप्रैल 2005 (आसफ अली रोड, न दिल्ली)
3. वही, पृ. 67
4. वही, पृ. 68
5. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार : सं. डॉ गंगा प्रसाद गुप्त, पृ.253 (रचना प्रकाशन, इलाहाबाद)।

AIRO JOURNALS